International Journal of Enhanced Research in Educational Development (IJERED)
ISSN: 2320-8708, Vol. 13 Issue 4, July-August, 2025

प्रेमचन्द के उपन्यासों में सामाजिक समस्याओं का निरूपण का तथ्यपरक विश्लेषण

शिवानी भदौरिया[1], डॉ. हरि विलास सिंह[2]

[1]रिसर्च स्कॉलर, सनराइज यूनिवर्सिटी अलवर
[2]एसोसिएट प्रोफेसर, सनराइज यूनिवर्सिटी अलवर, राजस्थान

सारांश

हिंदी कथा–साहित्य के विकास में मुंशी प्रेमचंद का योगदान अद्वितीय है। उन्हें आधुनिक हिंदी कहानी और उपन्यास का पितामह माना जाता है। उन्होंने जिस यथार्थवादी परंपरा की नींव डाली, वह केवल साहित्यिक अभिव्यक्ति नहीं थी, बल्कि एक सामाजिक आंदोलन थी, जिसमें उन्होंने समाज के उपेक्षित, शोषित, पीड़ित और हाशिए पर खड़े वर्गों को न केवल स्वर दिया, बल्कि उन्हें उनके अधिकारों के प्रति सचेत भी किया। इस सामाजिक यथार्थ की सबसे सशक्त और संवेदनशील अभिव्यक्ति उनके स्त्री–पात्रों में दिखाई देती है। प्रेमचंद का साहित्य भारतीय नारी जीवन के विविध पक्षों को अत्यंत आत्मीयता, सूक्ष्मता और संवेदना के साथ उद्घाटित करता है। वह नारी को एक सामाजिक संस्था के रूप में नहीं, बल्कि एक जीवंत, भावनाशील और आत्मनिर्भर इकाई के रूप में चित्रित करते हैं। उनके लिए स्त्री केवल गृहस्थी की धुरी या करुणा की पात्र नहीं, बल्कि संघर्षशील चेतना और आत्मसम्मान का प्रतीक है। प्रेमचंद की कहानियों में चित्रित नारी पात्र बहुधा ग्रामीण, निर्धन और निम्न सामाजिक पृष्ठभूमि से आती हैं, लेकिन उनमें साहस, विवेक और सहनशीलता का अद्भुत समन्वय होता है। वे पितृसत्तात्मक समाज की रूढ़ियों से टकराती हैं, अत्याचार और अन्याय का विरोध करती हैं, और कई बार मौन संघर्ष के माध्यम से बदलाव की प्रेरणा देती हैं। 'बड़े घर की बेटी' की अनारकली, 'माँ' की निरुपाय वृद्धा, 'ठाकुर का कुआँ' की गंगी, और 'स्त्री और पुरुष' की आत्मसम्मानी नायिकाकृये सभी पात्र प्रेमचंद की स्त्री दृष्टि की विविधता और सामाजिक गहराई को दर्शाते हैं। स्त्री जीवन पर प्रेमचंद का दृष्टिकोण न तो केवल दया और करुणा से संचालित है और न ही कट्टर आदर्शवाद से। वह स्त्री की समस्याओं को उसके सामाजिक–सांस्कृतिक संदर्भ में रखते हुए उसका यथार्थ चित्रण करते हैं। उनकी कहानियों में स्त्री के संघर्ष, उसकी अस्मिता की खोज, उसकी चुप्पी और विद्रोहकृसब कुछ अत्यंत मार्मिक और प्रामाणिक ढंग से प्रस्तुत होता है।

मुख्य शब्दः शोषित, पीड़ित, समस्याओं, संघर्ष, मार्मिक, प्रामाणिक

1. परिचय

31 जुलाई 1880 को वाराणसी के पाण्डेयपुर बाजार से लगभग चार किलोमीटर दूर आजमगढ़ रोड़ पर लमही नामक गाँव में एक कायस्थ परिवार में प्रेमचंद नामक शशि का जन्म हुआ, जो हिन्दी कथा साहित्य के आकाश मण्डल में एक नाम है। पिता अजायब लाल डाक मुंशी थे, और माता कुशल ग्रहिणी थीं। प्रेमचंद को तीन लड़कियों का नाम दिया गया था, इसलिए उसे "तेतर" कहा जाता था। इनकी तीन बहनों में से दो पहले ही मर चुकी थीं। उसकी एकमात्र बहन, ''सुग्गी'', उनसे छः साल बड़ी थी। इस बच्चे को पिता अजायबलाल ने "धनपतराय" नाम दिया, और ताऊ ने "नवाबराय" नाम दिया।

यह छोटा और एकमात्र पुत्र था, इसलिए माँ आनन्दी देवी उसे बहुत प्यार करती थीं। प्रेमचन्द को आठ वर्ष की उम्र में माँ का साया उठ गया। इनके पिता ने दूसरी शादी की, जिन्हें प्रेमचंद ने "चाची" कहा। प्रेमचन्द

भी अपनी माँ से स्नेह रखते थे, लेकिन नई माँ के आँचल में उनकी माँ की छाँव नहीं मिली। साहित्य में प्रेमचंद ने अपनी लेखनी के माध्यम से यह पीड़ा झलकी है।

जिन साक्ष्यों का उनके परिवार में उपलब्ध है, उनमें लगभग दो सौ साल पहले टीकाराम नामक एक व्यक्ति का उल्लेख है। किसी को भी नहीं पता कि वे कहाँ रहते थे और कब मर गए। इतनी जानकारी मिलती है कि इन्हीं के तीसरे पुस्त में मुंशी गुरसहाय लाल पटवारी बनकर ऐरे से लमही आए, इसलिए वह लमही के पास ऐरे नामक ग्राम के रहे होंगे। मुंशी गुरसहाय लाल ने चार पुत्रों को जन्म दियाः कौलेश्वर लाल, महावीर लाल, अजायब लाल और उदित नारायण लाल।

लमही में पटवारी गुरसहाय लाल ने साठ बीघे की आराजी बनाई और अपने दूसरे बेटे महावीर को इस जमीन का वारिस बनाया। गुरसहाय लाल की मृत्यु के बाद उनके भतीजे हरनारायण लाल, जो अपने चाचा के साथ ऐरे से लमही आए थे, ने धोखे से महावीर को पट्टी पढ़ाकर सारी जमीन अपने नाम कर दी। गुरसहाय लाल ने महावीर के बेटे के नाम अलग से छः बीघा जमीन लिखी थी।

पारिवारिक हालात बिगड़ने पर महावीर खेती करने लगे, जबकि कौलेश्वर लाल, अजायबलाल और उदितनारायण लाल डाक मुंशी बन गए। जब कौलेश्वर लाल की सिर्फ तीस साल की उम्र में मृत्यु हो गई, तो परिवार को बहुत दुःख हुआ। समाज ने उनकी विधवा पत्नी को बहुत अन्याय किया। रिश्ते के एक भतीजे के नाम के साथ उनका नाम जोड़कर उन पर चरित्रहीनता का आरोप लगाया, जिससे वह गाँव छोड़कर चुनार चली गई। तीस साल की उम्र में उनका बेटा मोती मर गया, जो एक बेटे और तीन बेटियों का पालन–पोषण करता था।

मुंशी अजायबलाल एक अच्छे व्यक्ति थे, जो वर्षों तक अपनी भतीज–बहू (मोती की पत्नी) को हर महीने पाँच रुपये देकर उनका सहयोग करते रहे। उधर, उनके छोटे भाई उदितनारायण को गबन के मामले में जेल की सजा सुनाई गई। उदितनारायण के परिवार की देखभाल भी अजायबलाल पर आई।

अजायबलाल ने दो बार शादी की थी। आनन्दी, मुंशी अजायबलाल की पत्नी, उनके अनुरूप मिली। देखने में जितनी सुंदर होती है, व्यवहार में उतनी ही नरम होती है। गोरी, मँझोला कद, भरा हुआ छरहरा शरीर, बड़ी–बड़ी आँखे, सुंदर उठी हुई सुड़ौल नाक, लम्बे–लम्बे बालों और मीठी आवाज के साथ, वह इतनी सुंदर थी कि शायद परिवार में कभी ऐसी सुंदर स्त्री नहीं थी। आनन्दी काशी विश्वविद्यालय के निकट एक गाँव में रहती थी। उनके पिता बहुत सरीफ, सज्जन और ईमानदार थे। किसी जमींदार के यहाँ वे कारिन्दा हो गए।[1] आनन्दी देवी भी अपने पिता की तरह खूबसूरत और दयालु थीं। उनकी शिक्षा बहुत कम थी। उसने केवल कुछ कैथी जानते थे। आनन्दी और अजायब लाल के जीवन में एक दुःख था कि उनके बच्चे नहीं थे. गाँव की महिलाओं ने कहा कि आनन्दी का मैके जाना अच्छा नहीं है।

वहाँ उसे भूत लगता है, जिससे बच्चे मर जाते हैं। अब चाहे यह भूत हो या बस संयोग हो, तीसरी लड़की आनन्दी को लमही में पैदा हुई जिसका नाम सुग्गी था. वह जीवित रही और सावन वदी 10 संवत् 1936, शनिवार 31 जुलाई, 1880 ई० को उसी कच्चे पुस्तैनी मकान में जन्मी, जिसे मुंशी अजायबलाल ने बनवाया था। ''[2]

प्रेमचंद का बचपन लमही में बीता। जब वे छोटे थे, वे विनोदप्रिय, नटखट और शरारती थे। वह बचपन से ही पुस्तकों को पढ़ने का शौक था। उन्हें महज सात वर्ष की उम्र में माँ का साया उठ गया। पत्नी की मृत्यु के बाद भी अजायबलाल की तबियत खराब हो गई, जिस पर फिर से उनका तबादला हुआ। फिर अजायबलाल ने नवाब को लमही पहुँचाया। माँ के बेटे को सिर्फ दादी का प्यार मिल सका, वह किसी भी बुराई पर उन्हें नहीं डाँटती थी। नवाब ने नई माँ के आने पर भी अकेलापन नहीं छोड़ा। लीन के अकेलेपन

[1] राय, अमृत, 'कलम का सिपाही', हंस प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण–नवम्बर, 2017, पृष्ठ–10

[2] ाय, अमृत, 'कलम का सिपाही', हंस प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण–नवम्बर, 2017, पृष्ठ–11

में इस बालक की आवारागर्दी बढ़ती गई। यहाँ तक कि बारह–तेरह साल की उम्र में नवाब ने सिगरेट पीने की बुरी आदत डाल दी। लंबे समय तक प्रेमचन्द ने बचपन की इस उदासीनता को नहीं भुला पाया।

उन्होंने अपने साहित्यिक जीवन में कई ऐसे पात्रों की रचना की, जिनकी माँ सात–आठ साल की उम्र में मर गई थी और उनका जीवन अभाव से भर गया था। वे अपने उपन्यास "कर्मभूमि" के नायक "अमरकान्त" में अपनी सूनेपन की व्यथा को व्यक्त करते हैं। अमरकान्त का कहना है कि बचपन जिन्दगी की वह उम्र है जब इंसान को मुहब्बत की सबसे ज्यादा जरूरत होती है। उस समय, पौधे को तरी मिलने पर उसकी जड़ें मजबूत हो जाती हैं, जिससे वह जिंदा रह सकेगा। उसकी जिंदगी उस वक्त खुराक न मिलने से खराब हो जाती है। उस समय मेरी माँ मर गई, और तब से मेरी रूह को भोजन नहीं मिला। यह मेरी जिन्दगी है। "[3]

2. अध्ययन का दायरा

मुंशी प्रेमचंद आधुनिक हिन्दी कहानी के पितामह माने जाते हैं। उनके साहित्यिक जीवन का आरंभ 1901 से हो चुका था, लेकिन उनकी पहली हिन्दी कहानी सरस्वती पत्रिका के दिसंबर अंक में 1915 में सौत नाम से प्रकाषित हुई और 1936 में अंतिम कहानी कफन नाम से। इससे पहले हिंदी में काल्पनिक, एय्यारी और पौराणिक धार्मिक रचनाएं ही की जाती थी। प्रेमचंद ने हिंदी में यथार्थवाद की षुरूआत की। प्रेमचंद की रचना–दृश्टि, विभिन्न साहित्य रूपों में अभिव्यक्त हुई। वह बहुमुखी प्रतिभा संपन्न साहित्यकार थे। उन्होंने उपन्यास, कहानी, नाटक, समीक्षा, लेख, सम्पादकीय, संस्मरण आदि अनेक विधाओं में साहित्य की सृश्टि की किन्तु प्रमुख रूप से वह कथाकार हैं। उन्हें अपने जीवन काल में ही उपन्यास सम्राट की पदवी मिल गयी थी। उन्होंने कुल 15 उपन्यास, 300 से कुछ अधिक कहानियाँ, 3 नाटक, 10 अनुवाद, 7 बाल पुस्तकें तथा हजारों पृश्ठों के लेख, सम्पादकीय, भाशण, भूमिका, पत्र आदि की रचना की लेकिन जो यष और प्रतिश्ठा उन्हें उपन्यास और कहानियों से प्राप्त हुई, वह अन्य विधाओं से प्राप्त न हो सकी। उनकी पहली उर्दू कहानी दुनिया का सबसे अनमोल रत्न कानपुर से प्रकाषित होने वाली जमाना नामक पत्रिका में 1908 में छपी। उनके कुल 15 उपन्यास है, जिनमें 2 अपूर्ण हैं। बाद में इन्हें अनुवादित या रूपान्तरित किया गया। प्रेमचंद की मृत्यु के बाद भी उनकी कहानियों के कई सम्पादित संस्करण निकले जिनमें कफन और षेश रचनाएँ 1937 में तथा नारी जीवन की कहानियाँ 1938 में बनारस से प्रकाषित हुए।

प्रेमचंद की लगभग 23 वर्ष की आयु में पहली रचना 'ओलिवर क्रामवेल' शीर्षक उर्दू–लेख 'आवाजए खल्क' साप्ताहिक उर्दू पत्र के 1 मई, 1903 के अंक में प्रकाषित हुई। उसके उपरांत उनकी 'असरारे मआबिद', 'रूठी रानी', 'किषना', 'प्रेमा' आदि उपन्यास प्रकाषित हुए, किन्तु उनका प्रथम उर्दू कहानी संग्रह 'सोजेवतन' देष–प्रेम एवं राष्ट्रीय भावना से परिपूर्ण कहानियों का संग्रह है। इस कहानी–संग्रह में देश प्रेम की पांच कहानियां संकलित है और इसकी 'दीवाचा' शीर्षक भूमिका प्रेमचन्द के देश–प्रेम और उनकी राष्ट्रीयता का ऐतिहासिक दस्तावेज है। प्रेमचंद ने इस भूमिका में लिखा है, "हर एक कौम का साहित्य अपने जमाने की सच्ची तस्वीर होता है। जो विचार कौम के दिमागों को सक्रिय करते हैं और जो भावनाएँ कौम के दिलों में गूँजती है, वे गद्य–पद्य के पृष्ठों में ऐसी सफाई नजर आती है, जैसे आइनमें में सूरत। हमारे लिटरेचर का प्रारंभिक दौर वह था जब लोग गलफत के नषे में मतवाले हो रहे थे। इस जमाने की साहित्यिक यादगार आषिकाना गजलों और चन्द अश्लील कहानियों के अतिरिक्त और कुछ नहीं। दूसरा दौर उसे समझना चाहिए, जब कौम के नये और पुराने विचारों में जिन्दगी और मौत की लड़ाई शुरू हुई और सांस्कृतिक सुधार की तज्बीजें सोची जाने लगीं। उस जमाने के किस्से तथा कहानी अधिकतर सुधार और नवीनता का ही पहलू लिए है।

यह काम साहित्यिक विश्लेषण, सांस्कृतिक इतिहास, और लैंगिक वाद की दिशा में प्रगति करता है। अध्ययन मुंशी प्रेमचंद के कथा शैली, पात्र विकास, और विषयों की दिशा में उसकी स्त्री पात्रों के माध्यम से करता है। यह जाँच साहित्य को पार करके पहले बीसवीं सदी के भारतीय लैंगिक संबंधों की प्रकटीकरण करती है। अनुसंधान पुस्तकों की सामाजिक मानकों और महिलाओं के संघर्षों की जाँच करके साहित्यिक वाद में महिलाओं के क्रियाशीलता पर और धनबाद देता है। परिणाम समाज में महिलाओं की समय–समय पर बदलती स्थितियों का एक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य प्रदान करते हैं, जो लैंगिक समानता के तर्कों के लिए प्रासंगिक हैं। यह अनुसंधान अनुसंधानकर्ताओं, छात्रों, और शिक्षकों को हिंदी साहित्य का अनुसंधान और शिक्षण करने के लिए

[3] राय, अमृत, 'कलम का सिपाही', हंस प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण–नवम्बर, 2017, पृष्ठ–25

स्रोत प्रदान करके और लैंगिक भूमिका की समीक्षा को बढ़ावा देने में सहायक है। प्रेमचंद की स्त्री पात्रों का तुलनात्मक अध्ययन समर्थित साहित्य को विस्तारित करके समान विषयों और लैंगिक चित्रणों को प्रकट करके तुलनात्मक साहित्य को विस्तारित करता है। प्रेमचंद की पुस्तकों की महिलाओं की चित्रण और मूल्यांकन के माध्यम से, अनुसंधान भारतीय साहित्य इतिहास और लैंगिक गतिविधियों को बढ़ावा देता है। यह अनुसंधान अनुसंधानकर्ताओं को प्रेरित करता है कि वे मुंशी प्रेमचंद के शब्दों का अध्ययन करें और उनके समाज पर छोड़े गए प्रभाव की स्थायिता का।

3. अध्ययन के उद्देश्य

1. मुंशी प्रेमचन्द का जीवन परिचय एवं समकालिक परिस्थितियों का अध्ययन करना
2. मुंशी प्रेमचन्द का युगीन परिवेश के परिप्रेक्ष्य में साहित्य का विष्लेशण करना।

4. शोध पद्धति

यह आलेख मुख्य रूप से वर्णन एवं विश्लेषण पर आधारित है। साथ ही ऐतिहासिक अध्ययन पद्धति के आधार पर विभिन्न संस्थाओं, कार्यालयों एवं पुस्तकालयों से तथ्यों का संकलन किया गया है । वर्तमान अध्ययन मुख्य रूप से द्वैतियक स्रोत पर ही आधारित है।

प्रस्तुत शोध–कार्य को सुदृढ़ बनाने हेतु वैज्ञानिक पद्धति से पूर्ण करने के लिए भरपूर प्रयत्न किया गया है और ज्ञान के विषय–क्षेत्र में अधिकाशांतः विशेष उपलब्धि की प्राप्ति के दृष्टिकोणों से यह शोध–कार्य संपादित किया है। इस शोध–कार्य के अंतर्गत मुंशी प्रेमचंद द्वारा रचित पाँच उपन्यासों यथा– गोदान, ग़बन, कर्मभूमि, निर्मला तथा सेवासदन को प्रमुख विषयवस्तु का यादृच्छिक चयन किया गया है। इस अध्ययन का तात्पर्य विषय–वस्तु का चयन करके कौन, किससे, कब, कहाँ और किस विषय पर एक–दूसरे से संवाद कर रहा है उसका अध्ययन विवेच्य उपन्यासों एवं समाजभाषाविज्ञान के माध्यम से पूर्ण करने का प्रयास किया है। इस विषय पर शोध–कार्य हेतु मैंने छह अध्यायों में विभाजित कर अध्ययन सामग्री का विश्लेषण ही नहीं, बल्कि प्रस्तुतीकरण भी किया है।

यह अध्ययन मुंशी प्रेमचंद की स्त्री प्रमुख पात्रों की चित्रण को विश्लेषित करने के लिए एक व्यवस्थित दृ ष्टिकोण का उपयोग करता है। उपन्यासों का चयन पात्र प्रतिष्ठान में विभिन्नता और प्रेमचंद के साहित्यिक करियर की विभिन्न अवधियों की सावधानीपूर्वक जाँच के आधार पर किया गया है। करीबी पाठ्य विश्लेषण भूमिकाओं, चुनौतियों, और पात्र विकास की जाँच करेगा।

सामाजिक–सांस्कृतिक संदर्भीकरण उपन्यासों को 20वीं सदी के प्रारंभिक भारत की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक गतिविधियों के साथ में रखता है। नारीवादी साहित्य सिद्धांत और पोस्टकोलोनियल दृष्टिकोण का उपयोग करके, अध्ययन का उद्देश्य कथाओं के भीतर लैंगिक गतिविधियों को व्याख्या करना है। एक तुलनात्मक विश्लेषण आकृतियों और विषय संरूपताओं की पहचान करता है, जबकि साक्षर पाठक प्रतिक्रियाओं का एक गुणात्मक विश्लेषण स्त्री पात्रों के समकालीन दर्शकों पर प्रभाव को मापता है। नैतिक परिस्थितियाँ अनुसंधान को मार्गदर्शन करती हैं ताकि संवेदनशीलता और इज्जत सुनिश्चित हो, जबकि डेटा का त्रिकोणीकरण अध्ययन की वैधता को बढ़ाता है। यह समर्थन करने का प्रयास कर रहा है कि मुंशी प्रेमचंद की चयनित उपन्यासों में महिलाओं के प्रति उनके चित्रण की सूक्ष्म परतें खोलें।

5. परिणाम एवं चर्चा

मुंशी प्रेमचन्द ने कायाकल्प में जिन सामाजिक विषमताओं का चित्रण किया है वे विषमताएँ किसी काल विशेष की समस्याएँ न होकर सर्वकालिक समस्याएँ कही जा सकती हैं और इसीलिये वर्तमान संदर्भ में भी प्रसंगिक हैं। मुंशी बज्रधर सिंह अपने इकलौते पुत्र चक्रधर से बहुत परेशान रहते थे। क्योंकि चक्रधर उनकी आज्ञा का पालन नहीं करता था। ''अब लड़के का रंग देखकर बार–बार झुंझलाते और उसे कामचोर, घमंडी, मूर्ख कहकर

International Journal of Enhanced Research in Educational Development (IJERED)
ISSN: 2320-8708, Vol. 13 Issue 4, July-August, 2025

अपना गुस्सा उतारते थे– अभी तुम्हे कुछ नहीं सूझता, जब मैं मर जाऊँगा तब सूझेगा। तब सिर पर हाथ रखकर रोओगे।''[4]

ये समस्या जिसका सामना तत्कालीन समाज आज से लगभग सौ वर्ष पूर्व कर रहा था। वर्तमान संदर्भ में भी यथावत बनी हुई है। वर्तमान में भी चाहे कोई भी समाज हो, चाहे उच्च वर्ग का या निम्न वर्ग का, लेकिन इकलौते पुत्र की मनमानी व स्वेच्छाचारिता से लगभग हर पिता परेशान रहता है। हालांकि समाजशास्त्री चाहे इसे प्रमुख सामाजिक समस्या न मानें परन्तु वर्तमान समय में यह एक प्रमुख और सोचनीय समस्या बन चुकी है। क्योंकि शासन की जनसंख्या नीति के तहत अधिकांश पिता इकलौते पुत्र वाले ही हो रहे हैं। और ये इकलौते पुत्र मुंशी प्रेमचन्द के कायाकल्प उपन्यास के चक्रधर की तरह मनमानी व स्वेच्छाचारिता से अपने पिता को परेशान करते हैं। र्तमान समाज में विद्वता व विद्वानों का सम्मान न होना भी एक सामाजिक विषमता ही है। यही सामाजिक विषमता मुंशी जी के कायाकल्प में भी थी। मुंशी बज्रधर अपने पुत्र चक्रधर को यथार्थ का भान कराते हुये कहते हैं –

''वह जमाना लद गया जब विद्वानों की कद्र थी, अब तो विद्वान टके सेर मिलते है। कोई बात नहीं पूँछता।'' जैसे और भी चीजें बनाने के कारखाने खुल गये हैं, उसी तरह विद्वानों के कारखाने खुल गये है, और उनकी संख्या हर साल बढ़ती जाती है।''[5]

इस प्रकार तत्कालीन समाज में विद्वानों का सम्मान नहीं होता था। जो लोग गलत सही किसी भी तरीके से धन अर्जित करके धनवान बन जाते थे, वही सम्मान के पात्र होते थे, और इसी सम्बन्ध में मुंशी बज्रधर अपने पुत्र से कहते है– ''दुनिया का दस्तूर है कि पहले अपने घर में दिया जलाकर रखते है, तब मस्जिद में जलाते हैं।''[6]

मुंशी जी ने तत्कालीन समाज की इन विषमताओं का चित्रण यथार्थ रूप में किया था। मुंशी जी ने कायाकल्प में तत्कालीन समाज में स्त्रियों की दशा के बारे में भी निर्भीकता के साथ लिखा था। जब जगदीशपुर के दीवान हरिसेवक सिंह की बेटी अपने शिक्षक चक्रधर से यह प्रश्न करती है कि सीता को राम ने घर से निकाल दिया तो सीता जी ने घर क्यों छोड़ दिया? जबकि उनका भी अधिकार बराबर था। इसके जवाब में चक्रधर कहते हैं –

''हमारे यहाँ पुरुषों की आज्ञा मानना स्त्रियों का परम धर्म माना गया है। यदि सीता जी पति की आज्ञा न मानतीं, तो वह भारतीय सती के आदर्श से गिर जातीं।''[7]

हमारे देश में तत्कालीन समाज की कितनी बड़ी विषमता थी कि पत्नी को पति की आज्ञा मानने पर उसे आदर्शवादी स्त्री समझा जाता था। समय के साथ भारतीय समाज में नारी की दशा में परिवर्तन हुआ है। वर्तमान संदर्भ में नारी, पुरुष के साथ कदम से कदम मिलाकर चल रही है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में महिलाएँ बढ़–चढ़कर हिस्सा ले रही हैं।

इन सबके बाद भी आज भी कहीं न कहीं पुरातन मूल्य स्पष्ट दृष्टिगोचर होने लगते हैं। समाज में आज भी स्त्रियों को निर्णय लेने की पूर्ण स्वतन्त्रता प्राप्त नहीं है। कहीं न कहीं उन्हें पुरुषों के द्वारा लिये गये निर्णय स्वीकार करने पड़ते हैं और आज भी वही स्त्री सम्मान की पात्र होती है, जो सामाजिक रीति–रिवाजों के पालन की जिम्मेदारी सम्हालती है। कायाकल्प उपन्यास में प्रेमचन्द ने तत्कालीन समाज की विषमता का चित्रण करते हुये लिखा है –
''ठाकुर हरिसेवक सिंह की आदत थी कि पहले दो–चार महीने तक नौकरों को वेतन ठीक समय पर दे देते थे, पर ज्यों–ज्यों नौकर पुराना होता जाता था, उन्हें उसके वेतन की याद भूलती जाती थी। उनके यहाँ कई ऐसे नौकर भी पड़े थे जिन्होंने बरसों से अपने वेतन नहीं पाए थे।''[8]

---

[4] कायाकल्प, प्रेमचन्द, साक्षी प्रकाशन दिल्ली, संस्करण 2016, पृष्ठ–8
[5] कायाकल्प, प्रेमचन्द, साक्षी प्रकाशन दिल्ली, संस्करण 2016, पृष्ठ–8
[6] कायाकल्प, प्रेमचन्द, साक्षी प्रकाशन दिल्ली, संस्करण 2016, पृष्ठ–9
[7] कायाकल्प, प्रेमचन्द, साक्षी प्रकाशन दिल्ली, संस्करण 2016, पृष्ठ–10

इससे बड़ी विषमता और क्या हो सकती है कि दिन–रात कठिन परिश्रम करने वाले मजदूरों को उनकी मजदूरी भी न मिलें। केवल पेट की ज्वाला (भूख) शांत करने के लिये इंसानों को दिन–रात मेहनत करनी पड़े। यह स्थिति तत्कालीन समाज की सच्चाई बयाँ करती है। मुंशी जी ने तत्कालीन बहुरूपिये समाज की सच्चाई को सबके सामने बड़ी निर्भीकता से रखा था। हालांकि इस सामाजिक वैषम्य को मिटाने का प्रयास भी प्रेमचन्द ने किया था। कायाकल्प में चक्रधर ने अपने लेख के माध्यम से सामाजिक विषमताओं को कम करने का प्रयास किया था। इसी लिये जब मुंशी यशोदानन्दन, चक्रधर के विवाह का प्रस्ताव लेकर उनके घर आये, तब –

''चक्रधर बाहर आए तो मुंशी यशोदानन्दन ने खड़े होकर उन्हें छाती से लगा लिया और कुर्सी पर बैठाते हुये बोले– अबकी सरस्वती में आपका लेखन देखकर चित्त बहुत प्रसन्न हुआ। इस वैषम्य को मिटाने के लिये आपने जो उपाय बताए हैं। वे बहुत विचार पूर्ण है।''[9]

मुंशी जी ने तत्कालीन समाज की एक और विषमता का चित्रण कायाकल्प में किया है– जिसमें उस जमाने में यदि किसी पुरुष को विवाह के बाद पसंद न आए तो वह दूसरी शादी कर लेता था। जबकि यदि किसी स्त्री के साथ ऐसा हो जाय तो उसे विवाह की इजाजत नहीं थी।

जब यशोदानंदन, चक्रधर से विवाह की चर्चा कर रहे थे, तो वे कहते है– ''मैं तो यहाँ तक कहता हूँ कि वर और कन्या में दो चार बार मुलाकात भी हो जानी चाहिये। कन्या के लिये तो यह अनिवार्य है। पुरुष को स्त्री पसंद न आई, तो वह और शादियाँ कर सकता है। स्त्री को पुरुष पसंद न आया तो उसकी सारी उम्र रोते ही गुजरेगी।''[10]

इतनी बड़ी विषमता थी कि स्त्रियों को पूनर्विवाह का अधिकार प्राप्त नहीं था। विधवा स्त्री को भी विवाह की इजाजत नहीं थी, और शायद इसी विषमता को दूर करने के प्रयास में मुंशी प्रेमचन्द ने स्वयं एक विधवा स्त्री 'शिवरानी देवी' से विवाह किया था। गोपालराय जी लिखते है –''वे समाज में नारी की सम्मानपूर्ण स्थिति के पक्षधर थे। विधवा विवाह के प्रबल समर्थक ही नहीं थे, बल्कि स्वयं भी उन्होंने एक विधवा से विवाह किया था।''[11]

इस प्रकार प्रेमचन्द ने विधवा विवाह जैसी सामाजिक विषमता को दूर करने का सार्थक प्रयास किया, क्योंकि धीरे–धीरे समाज में विधवा विवाह को स्वीकृति प्राप्त हो गयी। वर्तमान संदर्भ में यह सामाजिक विषमता लगभग दूर हो चुकी है। हालांकि अभी भी कुछ समाजों में विधवा विवाह को अच्छा नहीं माना जाता और न ही इसे स्वीकार किया जाता है। दहेज प्रथा भी एक सामाजिक विषमता थी जिसका उल्लेख प्रेमचन्द के अन्य उपन्यासों की तरह कायाकल्प में भी किया गया है। जब मुंशी यशोदानंदन चक्रधर के विवाह का प्रस्ताव लेकर मुंशी बज्रधर के यहाँ गये थे। तब यशोदानंदन और चक्रधर के बीच विवाह के संबंध में जो चर्चा हुई थी। उसके बाद जैसे ही चक्रधर, यशोदानंदन के पास से उठकर अंदर गये तो उनकी माँ निर्मला ने पूँछ– ''क्या बातचीत हुई? कुछ देंगें दिलाएंगें कि वही इक्यावन रूपये वालों में है।''[12]

इस प्रकार दहेज प्रथा उस जमाने के समाज की एक बड़ी बुराई थी। मुंशी जी ने इस बुराई के दुष्परिणामों की गहन विवेचना अपने साहित्य में की है। बावजूद इसके यह समस्या वर्तमान संदर्भ में भी विद्यमान है। विद्यमान ही नहीं बल्कि और ज्यादा भयावह रूप धारण कर चुकी है। आजकल आए दिन समाचार पत्रों में दहेज प्रथा की समस्या के दुष्परिणाम प्रकाशित होते रहते हैं, और किसी न किसी कि बेटी को इस बुराई के कारण या तो आत्महत्या जैसा कदम उठाना पड़ रहा है। या फिर उसे, उन नर पिशाचों द्वारा मौत के घाट उतार दिया जाता है।

---

[8] कायाकल्प, प्रेमचन्द, साक्षी प्रकाशन दिल्ली, संस्करण 2016, पृष्ठ–11

[9] कायाकल्प, प्रेमचन्द, साक्षी प्रकाशन दिल्ली, संस्करण 2016, पृष्ठ–14

[10] कायाकल्प, प्रेमचन्द, साक्षी प्रकाशन दिल्ली, संस्करण 2016, पृष्ठ–15

[11] राय गोपाल, हिन्दी उपन्यास का इतिहास, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, छठा संस्करण 2016, पृष्ठ–136

[12] कायाकल्प, प्रेमचन्द, साक्षी प्रकाशन दिल्ली, संस्करण 2016, पृष्ठ–15

दहेज प्रथा रूपी सामाजिक विषमता आज भी कई परिवारों के जीवन को तहस–नहस कर रही है। हालांकि वर्तमान संदर्भ में हमारे देश की सरकारों ने इस बुराई को दूर करने के लिये कानून बनाए है। इन कानूनों के सफल क्रियान्वयन द्वारा इस विषमता को दूर भी किया जा सकता है।

कायाकल्प उपन्यास में छुआ–छूत जैसी सामाजिक विषमता को भी प्रेमचन्द ने उजागर किया है। ठाकुर विशाल सिंह मुंशी बज्रधर से रानी साहब के रसोइया के बारे में पूँछते हुये कहते हैं –''मैं केवल इसलिये पूँछता था कि नया रसोइया कुलीन है या नहीं, अगर वह सुपात्र है, तो वही मेरा भी भोजन बनाता रहेगा।''[13]

कायाकल्प में वर्णित यह समस्या भारतीय समाज में कलंक के टीके की तरह थी। भारत के स्वतंत्र होने के पश्चात् जब भारतीय संविधान लागू हुआ तो संविधान के अनुच्छेद–17 (सत्रह) द्वारा इस कुरीति को समाप्त करने का प्रयास किया गया। वर्तमान संदर्भ में यह सामाजिक कुरीति लगभग समाप्त हो चुकी है। परन्तु प्रेमचन्द के समय में भारतीय समाज को अव्यवस्थित करने में इस छुआ–छूत रूपी कुप्रथा का बहुत बड़ा योगदान था। यह कुप्रथा इस कदर हावी थी कि तत्कालीन समाज में आए दिन इसके कारण विवाद की स्थिति निर्मित हो जाती थी और विवाद हो जाता था। कायाकल्प में आगरे के समाज का वर्णन करते हुये मुंशी प्रेमचन्द जी लिखते हैं– ''कहीं किसी जुलाहे ने किसी हिन्दू का घड़ा छू लिया और मुहल्ले में फौजदारी हो गई।''[14]

इस प्रकार छुआ–छूत रूपी सामाजिक विषमता को मुंशी जी ने यथार्थ रूप में चित्रित किया है। मुंशी प्रेमचन्द जी ने कायाकल्प उपन्यास में लड़की–लड़के की इच्छा के विरूद्ध होने वाले विवाह का भी विरोध किया है। क्योंकि यह तत्कालीन समाज की एक बहुत बड़ी विषमता थी। इस प्रथा के कारण कन्याओं का बाल विवाह व अनमेल विवाह कर दिया जाता था। जिसके भयानक दुष्परिणाम समाज व सम्बन्धीजनों को भुगतने पड़ते थे। इसीलिये प्रेमचन्द ने विवाह संस्कार में लड़की की इच्छा को प्राथमिकता देने की वकालत की है। कायाकल्प में विवाह के सबंध में चर्चा करते हुये मनोरमा– चक्रधर से कहती है।''जो विवाह लड़की की इच्छा के विरूद्ध किया जाता है, वह विवाह ही नहीं है। आपका क्या विचार है?''[15]

इसी प्रकार प्रेमचन्द ने विवाह के सम्बन्ध में अपने विचार प्रकट किये है। कायाकल्प में इसी पर चर्चा करते हुये मनोरमा पुनः चक्रधर से कहती है –''यदि आप ही का विवाह किसी कानी, काली–कलूटी स्त्री से हो जाए तो आपको दुःख न होगा? बोलिए! क्या आप समझते हैं कि लड़की का विवाह किसी खूसट से हो जाता है, तो उसे दुःख नहीं होता? उसका बस चले तो पति का मुँह तक न देखे।''[16]

6. निष्कर्ष

मुंशी प्रेमचन्द के उपन्यासों ने रचनाकाल से लेकर आज तक मानव जीवन को निरंतर मार्गदर्शन दिया है, शायद इसीलिए वे आज भी महत्वपूर्ण हैं। मुंशी जी के उपन्यासों और कहानियों में मानव जीवन को प्रेरित करने वाले घटनाक्रम वास्तविक हैं। हिन्दी साहित्य में मुंशी जी की रचनाएँ बहुमूल्य हैं। इनका साहित्य उनके व्यक्तित्व को उजागर करता है। आपका साहित्य उक्ति, "साहित्य समाज का दर्पण होता है", से पूरी तरह परिचित है।

मुंशी जी के साहित्य में कई शोध कार्य किए गए हैं, लेकिन आज भी उनके साहित्य में शोध की अनंत संभावनाएँ हैं। यह धरती अस्तित्व में रहने तक, एक लेखक की पुरानी रचनाएँ महत्वपूर्ण रहेंगी। ठीक इसी प्रकार मुंशी जी का साहित्य तब तक उपयोगी रहेगा जब तक सूर्य और चन्द्र धरती पर हैं। मुंशी जी का व्यक्तित्व संघर्षपूर्ण है। जन्म से लेकर मरने तक मुंशी जी जीवन भर संघर्ष करते रहे, लेकिन अपनी जिम्मेदारी से कभी विचलित नहीं हुए।

---

[13] कायाकल्प, प्रेमचन्द, साक्षी प्रकाशन दिल्ली, संस्करण 2016, पृष्ठ–44

[14] कायाकल्प, प्रेमचन्द, साक्षी प्रकाशन दिल्ली, संस्करण 2016, पृष्ठ–197

[15] कायाकल्प, प्रेमचन्द, साक्षी प्रकाशन दिल्ली, संस्करण 2016, पृष्ठ–47

[16] कायाकल्प, प्रेमचन्द, साक्षी प्रकाशन दिल्ली, संस्करण 2016, पृष्ठ–48–49

उनकी लेखनी ने इतना चमत्कार किया कि हिन्दी साहित्य, खासकर उपन्यास और कहानी में मुंशी जी के नाम से एक युग का उदय हुआ। हिन्दी साहित्य के विद्यार्थी आज भी इसे प्रेमचन्द युग के नाम से जानते हैं और पढ़ते हैं।

मुंशी जी की लेखनी में उपन्यास बहुत महत्वपूर्ण हैं। इन्होंने हिन्दी साहित्य में उपन्यास विधा को एक विशिष्ट स्थान दिया, इसलिए इन्हें उपन्यास सम्राट की उपाधि से सम्मानित किया गया है। आपके अधिकांश उपन्यासों में सेवासदन, प्रेमाश्रम, रंगभूमि, कायाकल्प, निर्मला, गबन, कर्मभूमि और गोदान शामिल हैं। जिनकी पृष्ठभूमि और कहानी के आधार पर समकान विमर्श और नवीन संदर्भों की खोज की गई है। मुंशी जी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि उपन्यास विधा मानव चरित्र का एक जीवंत चित्र है। उपन्यास का मूल उद्देश्य मानव चरित्र को रेखांकित करना और उसके रहस्यों को उजागर करना है। मुंशी जी का मानना था कि मानव चरित्र ही सृष्टि के केंद्र में है, जो परिस्थितियों से भी प्रभावित होता है। वह समाज में रहते हुए अपने सामाजिक संबंधों और परिस्थितियों के अनुसार बदल जाता है। इतना ही नहीं, मुंशी जी ने यह भी मानते थे कि मनुष्य का अंतर–जगत् बाहरी जगत् पर कई प्रकार की छायाएँ छोड़ता है, और इस बाहरी जगत् को प्रभावित करने के लिए मनुष्य का अंतर–जगत् कई तरह के निर्णय लेता है। वह हमें कभी सक्रिय रूप में दिखाई देता है, तो कभी निष्क्रिय रूप में हमें दिखाई नहीं देता। कुल मिलाकर, मुंशी जी ने उपन्यास को मानव जीवन की वास्तविकता से जोड़ा था। उनके उपन्यासों में तत्कालीन मानव जीवन का वास्तविक चित्रण है, इसलिए वे जीवंत हैं और हर समय मानव जीवन रहेगा। क्योंकि ये उपन्यास मानव जीवन का सटीक और जीवंत चित्रण हैं, इसलिए वे हर समय उपयोगी रहेंगे।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

[1] राय, अमृत, 'कलम का सिपाही', हंस प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण, नवम्बर, 2017।

[2] मानसरोवर (भाग–पाँच), नेशनल पेपर बैक्स, 2/35 अंसारी रोड़, दरियागंज, नईदिल्ली, पाँचवा संस्करण, 2011।

[3] मानसरोवर (भाग–छः), नेशनल पेपर बैक्स, दरियागंज नई दिल्ली, पाँचवा संस्करण 2011।

[4] मानसरोवर (भाग–सात), नेशनल पेपर बैक्स, दरियागंज नई दिल्ली, पाँचवा संस्करण 2011।

[5] लूसेन्ट सामान्य हिन्दी, लूसेन्ट प्रकाशन, पटना, सातवाँ संस्करण, 2015।

[6] पाण्डेय गोविन्द, पाण्डेय सरस्वती : 'हिन्दी भाषा एवं साहित्य का वस्तुनिष्ठ इतिहास', प्रथम संस्करण–2014, अभिव्यक्ति प्रकाशन, इलाहाबाद।

[7] राय, गोपाल : ''हिन्दी उपन्यास का इतिहास'', छठवाँ संस्करण, राजकमल प्रकाशन।

[8] मिश्र रामदरश : 'हिन्दी उपन्यास एक अर्न्तयात्रा' राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण, 1982।

[9] वर्मा ओंकारनाथः 'यू.जी.सी. नेट/जे.आर.एफ./सेट हिन्दी', उपकार प्रकाशन, आगरा 2018।

[10] यू.जी.सी. नेट/जे.आर.एफ./सेट हिन्दी', उपकार प्रकाशन, आगरा 2003।

[11] तिवारी अशोकः 'यू.जी.सी./नेट/जे.आर.एफ./हिन्दी पेपर द्वितीय, साहित्य भवन प्रकाशन, संस्करण 2003।

[12] नया ज्ञानोदयः संस्करण. लीलाधर मंडलोई, अंक–175, सितम्बर 2017।

[13] सांकृत सत्यकेतुः 'हिन्दी उपन्यास और परिसर–जीवन' संस्करण 2000।

[14] प्रेमचन्द की उपन्यास कला का उत्कर्ष 'गोदान' कृष्णदेव झारी नालंदा प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1988।

[15] मिश्र सत्यप्रकाश, गोदान का महत्व, सम्पादक, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पंचम संस्करण, 2014।

[16] झारी कृष्णदेव : प्रेमचन्द की उपन्यास कला का उत्कर्ष 'गोदान', नालंदा प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1988।